विचार बिन्दु

व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने का अवकाश नहीं। –बायरन

आधुनिक जीवन शैली का समाज पर प्रभाव

सभ्यता के प्रारंभ से जीवन शैली में बदलाव निरंतर होता रहा है। पिछले 30 वर्षों में, विशेष रूप से 1991 के उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों के कारण जीवन शैली में बहुत तेजी से बदलाव आया है, जिसका समाज पर भी व्यापक रूप से प्रभाव पड़ा है।

स्वतंत्रता के बाद पहले कुछ दशकों तक मितव्ययिता को एक प्रमुख महत्वपूर्ण गुण माना जाता था। बचपन से ही बचाने का गुण विकसित करने के उद्देश्य से बच्चों को गुल्लक दी जाती थी जिसमें वे अपनी पॉकेट मनी में बचत करके जमा करते थे । बड़ों में में बचत को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारों द्वारा कई प्रकार की प्रोत्साहन योजनाएं चलाई जाती थीं। बचत को, एक प्रकार से, किसी भी मध्यम वर्गीय परिवार द्वारा भविष्य की सुरक्षा की गारंटी के रूप में भी देखा जाता था। बच्चों की पढ़ाई हो, उनका विवाह हो या और किसी सामाजिक दायित्व का निर्वहन हो, बचत को सदैव उपयोगी माना जाता, विशेष रूप से मध्यमवर्गीय परिवारों में। वैसे भी जब हम जीवन शैली का समाज पर प्रभाव का विश्लेषण कर रहे हैं तो सर्वाधिक प्रभाव को मध्यवर्गीय समाज पर ही हुआ है। अत्यधिक उच्च वर्ग पर और निम्न पर इसका विशेष प्रभाव नहीं हुआ है। उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण विश्व के अन्य देशों में बनने वाले उत्पादों की उपलब्धि देश में बढ़ने लगी वस्तुओं की प्रकृति और उसकी गुणवत्ता में तेजी से बदलाव आया। पहले जहां वस्तुओं की उपलब्धि सीमित मात्रा में जिसे कारण पहले विक्रेताओं का प्रभुत्व था वहीं वस्तुओं की प्रचुर मात्रा में उपलब्धि के कारण यह अब *सेलर्स मार्केट* में बदल गया है। पुरानी पीढ़ी के लोगों को याद होगा कैसे गैस अथवा टेलीफोन कनेक्शन लेने के लिए सालों इंतजार करना पड़ता था। इस हेतु सांसदों और विधायकों का कोटा निर्धारित होता था। राजस्थान के उदयपुर शहर में बजाज स्कूटर की बुकिंग हेतु इतनी अधिक भीड़ हो गई कि भगदड़ मचने से कुछ लोग जीवन से हाथ खो बैठे थे। धीरे-धीरे समाज उपयोग से उपभोक्तावाद की ओर बढ़ गया है। पहले लोग जहां आवश्यकता के अनुसार वस्तुएँ खरीदते थे अब कई बार केवल दिखाने के लिए ऐसा करने लगे हैं, चाहे उसकी आवश्यकता न भी हो बाजार की संस्कृति अत्यधिक हावी होती चली गई। इसी कारण बचत की प्रवृत्ति कम हुई है। हाल ही में सरकार द्वारा आयकर कानून में लाए बदलाव के बाद, बचत की रही सही प्रवृत्ति भी प्रवृत्ति भी समाप्त हो जाएगी। सरकार के निर्णय का आशय यही है कि जितना अधिक खर्च कर सकें, उतना करें। यदि आपके पास पैसा नहीं भी है तो विभिन्न कंपनियां आपको कर्जा देने को तैयार बैठी हैं। फिर चाहे उसकी किश्तों को चुकाने में आपको शोषण का शिकार ही क्यों ना होना पड़े। वर्तमान समाज में *आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया* वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

बढ़ते खर्चे के कारण पति-पत्नी दोनों ने काम करना प्रारंभ कर दिया। आजकल एक प्रकाश से आवश्यक सा हो गया है कि पति पत्नी दोनों ही पूर्णकालिक काम पर अपने आप को लगाएं । इसके कारण बच्चों की परवरिश के लिए जितना समय पहले मिलता था वह समाप्त हो गया है। एकाकी जीवन जीने के लिए वे बाध्य हो गए हैं माता-पिता दोनों कार्य पर चले जाएं और छोटे बच्चे घर पर हैं वे या तो या तो वे आया के भरोसे पलते हैं या फिर उन्हें किसी creche' में डाल दिया जाता है। बच्चे प्रारंभ में ही मां की ममता और वात्सल्य से वंचित रहेंगे तो आगे चलकर इसका प्रभाव निश्चित रूप से उनके मानसिक विकास पर देखा पड़ता है।

बच्चों का माता-पिता के साथ प्रारंभ के कुछ साल न बिताने का ही परिणाम है कि उनका लगाव नगण्य होता है जिसके फलस्वरुप घर के बड़े बुजुर्गों के लिए बड़ी संख्या में वृद्ध आश्रम खोलने पढ़ रहे हैं। पहले संयुक्त परिवार होते थे, क्योंकि अधिकांशतः बच्चे अपने पिता के स्थानीय काम में भागीदार बन जाते, चाहे वह खेती हो कोई दुकान अथवा और कोई छोटा-मोटा व्यवसाय। अब कृषि भूमि पर दबाव बढ़ने के कारण और रोजगार के पर्याप्त साधन अपने गांव में उपलब्ध नहीं होने के कारण युवाओं को अपना घर छोड़कर बाहर किसी दूसरे शहर में जाने हेतु मजबूर होना पड़ता है। सीमित परिवारों के कारण घर एक या दो ही बच्चे होते हैं। इसके कारण, परस्पर सहयोग, सहकार की भावना जिस प्रकार संयुक्त परिवारों में बचपन से विकसित होती थी, उसके अवसर कम होते गए हैं । कुछ दशक पूर्व तक भाइयों के परिवार एक साथ रहते और यही पता नहीं होता था कि सगा भाई-बहन है अथवा चचेरा । सभी एक साथ रहते खाते, पढ़ते, खेलते थे अब ऐसे परिवारों की अवधारणा केवल किताबों में सिमट रह गई है। सामूहिक रूप से रहने की एवं एक-दूसरे के कष्ट में सहायता हेतु सदैव तत्पर रहने का जो भाव रहता था, वह धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है ।

आधुनिक तकनीक ने सामूहिक सह अस्तित्व के भाव को लगभग समाप्त कर दिया है । आजकल यह एक सामान्य दृश्य है कि यदि कोई पारिवारिक समारोह भी होगा तो उसमें सभी व्यक्ति (छोटे-बड़े), अपने-अपने मोबाइल पर व्यस्त रहते हैं। मोबाइल पर व्यर्थ होने वाला समय सामाजिकता के अवसर को कम ही करता है। समाज एकल परिवारों में बंट कर रह गया है और इस कारण सामुदायिक भावना समय कम होती गई। आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव, पारंपरिक त्योहारों पर भी पड़ा है। अलग-अलग ऋतु के अनुसार हमारे यहां त्योहार मनाए जाते रहे हैं और कई बार स्वादिष्ट व्यंजन, पापड़, बड़ी, पापड़ी, आलू चिप्स, मंगोड़ी आदि महिलाएं मिल-जुल कर बनाती थीं। बहु मंजिला इमारतों के समय में न तो साथ बैठकर बनाने के लिए स्थान उपलब्ध है न खाने के लिए।

> **आधुनिक जीवन शैली का सबसे बड़ा बुरा प्रभाव तो बच्चों एवं बुजुर्गों पर पड़ा है क्योंकि इन दोनों के लिए कामकाजी माता-पिता के पास कोई समय नहीं है। सभ्यता के विकास के साथ होना तो यह चाहिए था कि हम पश्चिम की कुछ अच्छी बातों को ग्रहण करते और अपने पुराने संस्कारों को बचाए रखते। किंतु दुर्भाग्यवश हुआ यह कि, हमने पश्चिम की विकृत प्रवृत्तियों को तो अपना लिया और अपने अच्छे संस्कारों को छोड़ दिया।**

आधुनिक जीवन शैली का सबसे बड़ा बुरा प्रभाव तो बच्चों एवं बुजुर्गों पर पड़ा है क्योंकि इन दोनों के लिए कामकाजी माता-पिता के पास कोई समय नहीं है। सभ्यता के विकास के साथ होना तो यह चाहिए था कि हम पश्चिम की कुछ अच्छी बातों को ग्रहण करते और अपने पुराने संस्कारों को बचाए रखते। किंतु दुर्भाग्यवश हुआ यह कि, हमने पश्चिम की विकृत प्रवृत्तियों को तो अपना लिया और अपने अच्छे संस्कारों को छोड़ दिया। जिसके फलस्वरूप तकनीकी के दुष्प्रभाव से स्वयं को बचाने के संस्कार बच्चों में विकसित नहीं हो पाए। आजकल जन्म लेते ही बच्चा मोबाइल को अपना सबसे बड़ा साथी मानने लगा है और ऐसा में मांएं भी जिम्मेदार हैं। अब तो माँ के बजाय मोबाइल को प्राथमिकता देने लगा । मोबाइल पर जिस प्रकार के खेल अधिकांश खेलते हैं उनसे हिंसक प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। आजकल की जीवन शैली का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यौनिक हिंसा की बढ़ती घटनाएं हैं। युवाओं में सहिष्णुता तो जैसे समाप्त ही हो गई है।

आधुनिक जीवन शैली में महिलाओं के सशक्तिकरण का तात्पर्य यह मान लिया गया कि वे बाहर जाकर काम करें, परिवार और बच्चों पर अधिक समय ङव्यर्थङ नहीं करें क्योंकि यह बेकार का काम है। तथाकथित बराबरी की आड़ में उन्होंने हर उस काम को कमजोर करने की निशानी मान लिया है जो परिवार में सामंजस्य, सहयोग के लिए किया जाय। के बड़ों का अनादर करना सशक्तिकरण का अर्थ मान लिया गया है। किसी भी बात को बिना तार्किक आधार के स्वीकार नहीं करना एक बात है और अपनी भाषा की मर्यादा छोड़कर बड़ों से बात करना अलग बात है। आधुनिकता का समाज पर प्रभाव यह भी है कि भाषा की मर्यादा कम हुई है। घरों में आजकल जिस प्रकार मर्यादा विहीन भाषा का प्रयोग होता है वह भी आधुनिक शैली का एक प्रभाव है ।

पहले जहां विवाह समारोह तीन-चार दिन चलते थे, इसके बावजूद बहुत कम खर्च होता था, वहीं आजकल तड़क-भड़क और दिखावे पर अधिक जोर हुआ है। जिनकी हैसियत नहीं है उन्हें भी कर्जा लेकर विवाह समारोह पर अनावश्यक खर्चा करना पड़ता है। समाज में गैर बराबरी बढ़ने के साथ ही संपन्न वर्ग अपने से कमजोर लोगों को अपनी संपन्नता का अहसास कराने के इन समारोहों को अच्छा अवसर मानता है।

एक लाभ आधुनिकता का हुआ है। जहां स्त्रियों को केवल वस्तु माना जाता था वहां उन्हें अब इंसान अवश्य माना जाने लगा है। पहले के जमाने में स्त्रियों को शास्त्रों में तो अनुसार पूजनीय माना गया किंतु व्यवहार उनके साथ उसी प्रकार का होता था जैसे वह उनकी खरीदी हुई गुलाम हो।

गत कुछ वर्षों में, आईटी के क्षेत्र में अनेक युवतियों ने प्रवेश किया है, जिसके कारण वे आर्थिक रूप से सक्षम हुई हैं, किंतु साथ ही मल्टीनेशनल कंपनियों में काम करने के कारण विदेशों के समय अन्तर ले के चलते देर रात तक काम करना पड़ता है । इसके कारण समाज में मिलने-जुलने की प्रवृत्ति बहुत कम हुई है। पहले जहां किसी मित्र या परिजन के यहां जाना होता, तो सीधे ही उसके घर पहुंच जाते थे। समय लेने की औपचारिकता नहीं होती थी। एक मोहल्ले में गए, कोई मिल गया तो ठीक और जो नहीं मिल गए तो कोई बात नहीं, कोई और तो मिल ही जाता था। दरवाजे पर दस्तक देकर यदि कोई आ जाता तो उसका पूरी गर्माहट से स्वागत होता था । आजकल तो बिना फोन पर समय निश्चित बिना मिलना सम्भव ही नहीं है। यदि कोई बिना बताए पहुंच जाए तो उसके प्रति इस प्रकार का भाव दर्शाया जाता है जैसे आने वाले ने कोई अपराध कर लिया हो। एक कमरे में या छोटे घरों में भी बड़ी आसानी से कई लोग रह लेते थे। आजकल कई कमरों वाला घर होते हुए भी रिश्तेदारों को होटल में ठहराना चाहते हैं। रिश्तेदारों में त्योहारों का अर्थ केवल गिफ्ट का लेन-देन बन कर रह गया है। कुछ रिश्ते तो भविष्य में केवल इतिहास ही बनकर रह जाएंगे। पहले लगभग हर व्यक्ति के पास चाचा, ताऊ, ताई, चाची, मामा-मामी, बुआ, फूफा, मौसा, मौसी हुआ करते थे । आजकल सब रिश्ते केवल अंकल आंटी तक सीमित होकर रह गए हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति के कारण विवाह जैसी संस्था पर भी खतरे के बादल मंडराने लगे हैं।

आधुनिक संस्कृति का हमारे त्योहारों पर भी बहुत असर पड़ा है । दिवाली पर मिट्टी के दिए जलाना लगभग समाप्त हो गया है । अब तो चीन में बने हुए एलईडी लाइट से ही दिवाली मनाने की औपचारिकता पूरी कर लेते हैं । पहले जहां होली पर अरारोट की गुलाल बनाई जाती थी वहीं आजकल रासायनिक गुलाल लोग बनने लगी है जिससे त्वचा खराब होने के डर से लोगों ने होली खेलना बहुत कम कर दिया है। आजकल मोहल्लों में खेलने वालों की टोलियाँ बहुत कम दिखती हैं। गत कुछ वर्षों से बहुमंजिला इमारतों में पुनः एक बार ङसोसायटी कल्चरङ प्रारंभ हुआ है ।

राजनीति के क्षेत्र में भी प्रचार का तरीका पूरी तरह बदल गया है। पहले जहां घर-घर जाकर प्रचार, पर्चे बांट कर एवं गलियों-मोहल्लों में सभा की जाती थी, वहीं आजकल इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के कारण स्वरूप ही बदल गया।

गत दो-तीन दशकों में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय का महत्व कम हो गया है और कोचिंग संस्थान अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। यह कहना सही होगा कि कोई भी क्षेत्र हो, अब उसमें पूर्णतया व्यावसायिकता का प्रवेश हो गया है। पहले जहां चिकित्सा और शिक्षा में लोग मानवता की सेवा के लिए आते थे थे वहीं आजकल ये जल्दी पैसा कमाने के साधन बन गए हैं। पैसा कमाने की होड़ में लोगों ने नैतिकता, मानवीयता, सब को ताक पर रख दिया है। समाज में पैसे की प्रतिष्ठा पहले से कहीं अधिक हो गई है । पहले जहां सद्व्यवहार और ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता था और उसे प्रतिष्ठा भी मिलती थी, वहीं ये आजकल जीवन में आगे बढ़ने के मार्ग में बाधक माने जाने लगे हैं। आधुनिक जीवन शैली का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह हुआ कि मनुष्य का प्रकृति से संबंध विच्छेद ही हो गया है। आजकल के बच्चों के लिए प्रदूषण के कारण आकाश में रात को सितारे देखना संभव ही नहीं है। फल सब्जियों एवं अन्य खाद्य पदार्थों को कृत्रिम रूप से बड़ा और अच्छा दिखाने की होड़ में कई प्रकार के रासायनिक तत्वों का उपयोग होने लगा है, जिसके कारण के कारण कई प्रकार की बीमारियां विशेषकर कैंसर में बड़ी तेजी से बढ़ोतरी हुई है ।

कहा जा सकता है कि आधुनिक जीवन शैली जो वरदान सिद्ध हो सकती थी, मनुष्य के लोभ और स्वार्थ के कारण समाज के लिए अभिशाप बन कर रह गई है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पं भवानी सहाय शर्मा जी की जयंती दिवस 21 मार्च के संदर्भ में सादर श्रद्धांजलि

स्वतंत्रता सेनानी: पं. भवानी सहाय शर्मा

डॉ. डी. सी. मीना

पहलवानी का शौक रखने वाले एवं 'शेर-ए-राजस्थान' के नाम से प्रसिद्ध पंडित भवानी सहाय शर्मा का जन्म माता जीवनी एवं पिता श्री रामचन्द्र शर्मा के यहां अलवर जिले के राजगढ कस्बे में 21 मार्च 1909 को हुआ। इनके पिता पंडित रामचन्द्र रेल विभाग में बांदीकुई कस्बे में गार्ड के पद पर कार्यरत थे।

भवानी सहाय ने प्रारंभिक शिक्षा राजगढ में तथा मिडिल तक की शिक्षा बांदीकुई से प्राप्त की। मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आगे की शिक्षा प्राप्त करने हेतु दिल्ली के रामजस कॉलेज में दाखिला लिया। उनका परिचय कैलाशपति नामक क्रांतिकारी से हुआ।

हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) दल में अनुशासन एवं गोपनीयता के नियम बहुत कठोर थे। पं. भवानी सहाय को लगातार छः माह तक उक्त दल की कठिन परीक्षा से गुजरने के पश्चात ही दल में शामिल किया गया। गोपनीयता के नियम के तहत उन्हें प्रत्येक जगह अलग-अलग नाम से जाना जाता था। उनकी गतिविधियों पर गुप्तचर एजेंसियों को संदेह होने लगा तो उन्होने छात्रावास छोड़ दिया और कमरा किराये पर लेकर रहने लगे। दल की ओर से पं. भवानी सहाय को दिल्ली आने-जाने वाले सदस्यों के आवास एवं सुरक्षा का काम सौंपा गया था। सन् 1927 में पं. भवानी सहाय को हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) की दिल्ली शाखा का सहायक ऑर्गेनाइजर नियुक्त किया गया। जब लाहौर षडयंत्र केस में जयदेव कपूर की गिरफ्तारी हुई तो जयदेव कपूर के कोट की जेब से भवानी सहाय का नाम एवं पता लिखा एक पर्चा मिला। इस पर्चे में अंकित पते पर पहुंचकर पुलिस निरीक्षक पं. भवानी सहाय के भाई श्री देवी सहाय को लेकर पं. भवानी सहाय के पते पर दिल्ली पहुंचे जहां पुलिस निरीक्षक ने पं. भवानी सहाय से गम्भीर पूछताछ की लेकिन वो अपनी चतुराई से बच गये तथा पुलिस निरीक्षक ने उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया।

जब बड़े भाई को पं. भवानी सहाय की क्रांतिकारी गतिविधियों के बारे में पता चला तो उन्होने यह राह छोड़कर घर बसाने की सलाह दी तो पं. भवानी सहाय ने उत्तर दिया कि "अब मेरे जीवन का एक ही लक्ष्य है भारत माता को आजाद कराना।"

पं. भवानी सहाय की निष्ठा एवं समर्पण से चन्द्रशेखर आजाद अत्यधिक प्रभावित थे। इसलिए आजाद ने उन्हे स्वंय पिस्तौल चलाना सिखाया। तकनीकी रूप से दक्ष होने के कारण पं. भवानी सहाय सभी तरह की पिस्तौलों की मरम्मत के अलावा मोटर एवं मोटर साईकिल की मरम्मत का काम भी जानते थे। अतः उनको महत्वपूर्ण कार्य सौंपे गये। पं. भवानी सहाय अपने साथियों के साथ दिल्ली के समीप नलगढ में हथियारों का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। मवाना (मेरठ), टाटेरी (बागपत), हापुड, बलूचपुर इत्यादि पं. भवानी सहाय के गुप्त सुरक्षित ठिकाने थे। पं. भवानी सहाय प्रथम बार 28 अगस्त, 1931 को दिल्ली षडयंत्र केस के फरार क्रान्तिकारी के रूप में गिरफ्तार किये गये लेकिन प्रशासनिक एवं वित्तीय कारणों से मुकदमा ना चलाकर धारा 110 सीआरपीसी का मुकदमा बनाकर 10,000 रूपये की जमानत पर रिहा कर दिया। इसी दौरान लोथेन ट्रेन आउटरेज केस में इनकी संदिग्ध भूमिका के आधार पर 26 फरवरी, 1932 को उन्हें "स्पेशल पावर आर्डिनेंस" की धारा 3 में हिरासत में लिया गया।

हरबंधु पार्टी के कलकत्ता, इलाहबाद, मेरठ, पंजाब एवं दिल्ली में होने वाली क्रान्तिकारी गतिविधियों से भी संबंध थे। इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इनकी गिरफ्तारी को जारी रखने हेतु 22 फरवरी 1932 को दिल्ली के सी.आई.डी. के पुलिस अधीक्षक ने दिल्ली के उपायुक्त को पत्र लिखा कि पं. भवानी सहाय उर्फ रामनाथ उर्फ रामप्रसाद पुत्र श्री पं.रामचन्द्र ब्राहम्ण निवासी राजगढ रियासत अलवर को 'रेगुलेशन-।।। ऑफ 1818' के तहत गिरफ्तार किया जाये, इसकी गिरफ्तारी के लिए जो सामग्री तैयार की गई वह दिल्ली पुलिस अधिकारी मिस्टर पील द्वारा की गई।

उपायुक्त ने 18 मार्च 1932 को डायरेक्टर ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन मिस्टर बामफोर्ड को लिखा कि क्या भवानी सहाय के विरूद्व तैयार सामग्री दो जिला न्यायाधीशो को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त है। इसके जवाब में दिनांक 26.03.1932 को डायरेक्टर ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (डी.आई.बी.) के प्रमुख मिस्टर बामफोर्ड ने अपनी विस्तृत गुप्त रिपोर्ट गृह विभाग को भेजी। मिस्टर बामफोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि पं. भवानी सहाय के खिलाफ जो रिपोर्ट मिस्टर पील द्वारा तैयार की गई थी वह पाँच आतंकवादियों के बयानों पर आधारित थी। इन पाँच आतंकवादियों के बयानों के आधार पर मिस्टर पील द्वारा रिपोर्ट तैयार की गई।

पुनः कैलाशपति और ओमप्रकाश दोनों ने अपने बयानों में उल्लेख किया है कि पं. भवानी सहाय ने दिल्ली में 25.01.1930 को "द फिलास्फी ऑफ द बम" शीर्षक वाले पत्रकों का वितरण पार्क में किया था।

दिल्ली, संयुक्त प्रांत, पंजाब और बम्बई में इस संगठन की गतिविधियों को देखा जा सकता है। 26 जनवरी 1932 को हिन्दुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) के पर्चे (पम्पलेट) तथा अन्य गतिविधियों के लिए दिल्ली षडयंत्र मामले में फरार लोगों की गतिविधियों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है जिनमें भवानी सहाय, यशपाल, काशीराम और हंसराज प्रमुख हैं। इनमें यशपाल और काशीराम को गिरफ्तार कर लिया गया है।

बामफोर्ड की रिपोर्ट पर गृह विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने टिप्पणी की, कि भवानी सहाय के खिलाफ मामला बहुत मजबूत है जो मैने देखा है उससे कहीं ज्यादा मजबूत है। मैं मिस्टर बामफोर्ड के द्वारा लिखे गये सभी तथ्यों से सहमत हूँ और भवानी सहाय के खिलाफ "रेगुलेशन-।।। ऑफ 1818" के मामले को दर्ज करने में मुझे कोई हिचकिचाहट नही है जो जीवन भर के लिए जेल में नहीं रहने के लिए बेहद भाग्यशाली है। दो हत्याओं के प्रयास के अलावा वह व्यवहारिक रूप से दिल्ली के षडयंत्रकारियों द्वारा किये गये सभी अपराधों में शामिल रहा है। मेरी राय में कोई भी सत्र न्यायाधीश उक्त प्रस्ताव की सहमति के अलावा कोई अन्य निर्णय संभवतः नही दे सकता।

पं. भवानी सहाय के मामले में दो जिला न्यायाधीशो की राय लेने का आदेश दिया गया जो या तो पंजाब से हो या बंगाल से। भारत सरकार ने 5 अप्रेल 1932 को पंजाब सरकार को लिखा कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी भवानी सहाय जो कि आपातकालीन शक्तियों के अध्यादेश (इमरजेंसी पावर आर्डिनेंस) की धारा 3 के तहत 25 अप्रेल 1932 तक हिरासत में हैं। डायरेक्ट्रेट ऑफ इन्वेस्टीगेशन ब्यूरो द्वारा भवानी सहाय पर "रेगुलेशन-।।। ऑफ 1818" के तहत कार्यवाही प्रस्तावित है। दिल्ली प्रशासन द्वारा न्यायाधीश उपलब्ध करवाना सम्भव नही हैं। अतः पंजाब सरकार अतिशीघ्र दो जिला न्यायाधीशो की सहमति प्राप्त कर भिजवाये। इसके प्रत्युत्तर में लाहौर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश गोर्डन वाल्कर ने दिनांक 18.04.1932 को रिपोर्ट की कि, "मेरे सामने उपलब्ध सबूतों के आधार पर मैं संतुष्ट हूँ कि भवानी सहाय क्रांतिकारी साजिश का सदस्य है और उसके बड़े होने से राज्य को खतरा है।" दिल्ली के चीफ कमिश्नर ने केन्द्रीय गृह सचिव को 28 अप्रैल 1932 को पत्र लिखकर प्रार्थना की–दिल्ली की जेल में राज्य कैदी के लिए सुविधाओं का अभाव है एवं भवानी सहाय एकांतवास से गुजर रहे हैं तथा इस जेल में दिल्ली षडयंत्र केस के विचाराधीन कैदियों से इनका संवाद स्थापित हो सकता है इसलिए इनको अन्यत्र जेल में स्थानान्तरित किया जावे जिस पर गृह विभाग द्वारा पंजाब में चल रहे गदर आन्दोलन एवं बंगाल में चल रही क्रान्तिकारी गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा की दृष्टि से वहां न भेजकर भवानी सहाय को 22 फरवरी 1933 को इनके निवास स्थान की निकटता को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश स्थित नैनी जेल में भेजा गया।

3 अगस्त 1933 को भवानी सहाय ने गर्वनर जनरल को पत्र लिखकर निवेदन किया कि उन्हें बिना ट्रायल के संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया गया है। देश की राजनीतिक परिस्थितियां बदल रहीं हैं तथा प्रतिदिन निर्दोष बन्दियों को रिहा किया जा रहा है तथा प्रार्थी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। 29 जनवरी 1934 को जेल अधीक्षक ने आई.जी. जेल उत्तर प्रदेश को पत्र लिखकर कहा कि पिछले 06 माह से उनके स्वास्थ्य में लगातार सुधार हो रहा है।

भवानी सहाय के भाई देवी सहाय ने महात्मा गांधी को भवानी सहाय को रिहा करवाने के संबंध में लिखे गये पत्र के प्रत्युत्तर में महात्मा गांधी ने 24 फरवरी 1938 को पत्र द्वारा लिखा कि "भाई देवीसहाय, सब कैदियों के लिए मेरी कोशिश तो चल रही है"। इसी क्रम में 25 मार्च 1938 को विधानसभा में मोहन लाल सक्सैना द्वारा तीनों राज्य कैदियों श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा, श्री वैशम्पायन एवं भवानी सहाय शर्मा की रिहाई के संबंध में उठाये गये प्रश्न के उत्तर में सरकार द्वारा जवाब दिया गया कि "जब तक लोकहित में उचित समझा जाएगा इनको हिरासत में रखा जायेगा"। अंग्रेजों द्वारा उक्त कैदियों की रिहाई के लिए अनुचित मांगों को नहीं मानने पर 11 जनवरी 1939 को लाल बहादुर शास्त्री ने दिल्ली जेल में भवानी सहाय को पत्र लिखकर उनके साहस की प्रशंसा की, साथ ही रिहा नहीं होने पर दुख भी प्रकट किया। उन्होंने सुझाव दिया कि वर्तमान परिस्थितियों में अहिंसा के द्वारा ही कार्य हो सकता है।

जेल में भवानी सहाय के साथ अजमेर के श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा एवं झांसी के श्री वी. वैशम्पायन भी थे। श्री वैशम्पायन ने अपने संस्मरण "अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद" में लिखा है कि 1937 में श्री लाल बहादुर शास्त्री जी नैनी जेल के विजिटर नियुक्त किये गये थे। उस दौरान हमने श्री शास्त्री जी से जेल से रिहा करवाने हेतु निवेदन किया जिसके प्रत्युत्तर में शास्त्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार उन्हें रिहा नहीं कर सकती, हमारा रिहाई का प्रश्न केन्द्र सरकार के अधीन है। तब हमने केन्द्र सरकार को लिखित आवेदन किया कि हमें दिल्ली वापस भेजा जाये अन्यथा हम अपनी रिहाई के लिए अनशन करेंगे। इस पर 01 फरवरी 1938 को हमें दिल्ली भेज दिया गया। दिल्ली जाकर हमने पुनः केन्द्र सरकार को पत्र लिखा कि हमें छोडा नहीं गया तो हम भूख-हडताल कर देंगे। इस पर केन्द्र सरकार द्वारा हमसे लिखित में हिंसात्मक कार्यवाही में भाग नहीं लेने तथा दिल्ली एवं पंजाब नहीं जाने का आश्वासन मांगा गया। ऐसा हमारे द्वारा कोई भी आश्वासन नहीं दिया गया तथा मैंने मेरे साथी श्री ज्वाला प्रसाद शर्मा एवं श्री भवानी सहाय शर्मा के साथ भूख हडतात प्रारंभ कर दी। उस समय कांठोस का त्रिपुरी अधिवेशन चल रहा था। उसी अवसर पर गांधी जी ने भी कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के प्रश्न पर भूख हडताल की थी। हमारी 23 दिन की भूख हडताल के पश्चात गांधी जी की मध्यस्थता से हमारा अनशन समाप्त हुआ और हम एक सप्ताह के अन्दर ही 19 मार्च 1939 को छोड दिये गये। वर्ष 1941 में भिवाणी के स्वतंत्रता सेनानी श्री नेकीराम शर्मा की पुत्री विद्यादेवी शर्मा से उनकी शादी हुई। उसके बाद भवानी सहाय ने स्वतंत्रता प्राप्ति तक अपने निवास स्थान राजगढ, अलवर में प्रजामण्डल आन्दोलन एवं आजादी की लडाई को जारी रखा। राजगढ में उन्होंने बिजलीघर, चक्की तथा सूत कताई हेतु बॉबिन फैक्ट्री की स्थापना की। भवानी सहाय राजगढ नगरपालिका के अध्यक्ष रहे तथा थानागाजी से राजस्थान विधानसभा के 05 वर्ष तक सदस्य रहे।

15 अगस्त 1972 को प्रधानमंत्री के हाथ से दिल्ली में ताम्र पत्र स्वीकार करते हुए श्री भवानी सहाय ने कहा कि "क्रान्तिकारी कहलाने वाला आदमी केवल इस बात को अपना गौरव समझता था और अपने जीवन का सबसे बडा पुरस्कार मानता था कि उसका जीवन मातृभूमि की सेवा में समर्पित हो जाये। सरफरोशी की तमन्ना उसकी एकमात्र तमन्ना थी, मातृभूमि उसकी एकमात्र देवी थी और स्वतंत्रता उसका एकमात्र लक्ष्य"। उत्तरी भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी पं. भवानी सहाय शर्मा का 7 अक्टूबर 1985 को जयपुर में लम्बी बीमारी के चलते निधन हो गया।

–डॉ. डी.सी. मीना,
आर. ए. एस.

'चीन में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले लोगों के बीच पीएम मोदी लोकप्रिय'

■ अमेरिका की पत्रिका "डिप्लोमैट" में प्रकाशित एक लेख के अनुसार चीन में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी काफी लोकप्रिय हैं और उन्हें सम्मान से मोदी लाओक्सियन कहा जाता है, जिसका अर्थ "मोदी अमर" हैं।

जयपुर। अमेरिका की पत्रिका "डिप्लोमैट" में प्रकाशित एक लेख के अनुसार चीन में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों (नेटिजेन) के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी काफी लोकप्रिय हैं और उन्हें सम्मान से मोदी लाओक्सियन कहा जाता है, जिसका अर्थ "मोदी अमर" हैं।

दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के बावजूद, किसी अंतरराष्ट्रीय नेता के लिए यह एक दुर्लभ सम्मानजनक संदर्भ है। रणनीतिक मामलों पर केंद्रित पत्रिका "डिप्लोमैट" के लेख "चीन में भारत को कैसे देखा जाता है?"में पत्रकार म्यू चुनशान ने यह भी लिखा कि ज्यादातर चीनी मानते हैं कि मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व के प्रमुख देशों के बीच संतुलन बना कर रख सकता है। चुनशान चीनी सोशल मीडिया विशेष रूप से सिना वेइबो का विश्लेषण करने के लिए मशहूर हैं। सिना वेइबो चीन में ट्विटर जैसा सोशल मीडिया मंच है और इसके 58.2 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं। आलेख के अनुसार "चीनी इंटरनेट पर प्रधानमंत्री मोदी का एक असामान्य उपनाम है: मोदी लाओक्सियन। लाओक्सियन का संदर्भ कुछ विशेष क्षमताओं वाले एक बुजुर्ग अमर व्यक्ति से है। उपनाम का अर्थ है कि चीन में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले लोग सोचते हैं कि मोदी कुछ भिन्न हैं-और आश्चर्यजनक भी-अन्य नेताओं की तुलना में।"

उन्होंने लिखा है कि चीनी लोग मोदी की पोशाक और शारीरिक हावभाव दोनों की ओर इशारा करते हैं तथा उनकी कुछ नीतियों को भारत की पिछली नीतियों से अलग मानते हैं।

कुछ चीनी नागरिकों का मानना है कि भारत रूस, अमेरिका सहित विभिन्न प्रमुख देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रख सकता है। उन्होंने कहा कि लाओक्सियन शब्द मोदी के प्रति चीनी लोगों की जटिल धारणा को दर्शाता है, जिसमें जिज्ञासा, विस्मय आदि शामिल हैं। म्यू ने कहा, "मैं करीब 20 साल से अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टिंग कर रहा हूं और चीनी नेटिजेन (इंटरनेट उपयोगकर्ता) के लिए किसी विदेशी नेता को उपनाम देना दुर्लभ है। मोदी का उपनाम अन्य सभी से ऊपर है। निश्चित रूप से, उन्होंने चीनी जनमत पर एक छाप छोड़ी है।"

कैलामाता के दर्शनों के लिये उमड़ रहे भक्त

■ कैला मैया के लांगुरिया गीतों की धुन पर मां कैला देवी धाम की ओर भक्त बढ़ते जा रहे हैं

करौली (नि.स.)। कैलादेवी के चल रहे लक्खी मेले में माता के दर्शनों के लिए पद यात्रियों का रेला का रेला उमड़ रहा है। कैला मैया के लांगुरिया गीतों की धुन पर मां कैला देवी धाम की ओर बढ़ते जा रहे है।

कैला देवी जी के लक्खी मेले में मां कैला देवी के दर्शनों के लिए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली आदि जगह से श्रद्धालु पदयात्रा पर आ रहे हैं करौली में प्रवेश से पूर्व करौली- हिण्डौन सड़क मार्ग पर करौली के निकट स्थित अंजनी माता मंदिर के पास पांचना नदी के पुल के पास बने घाटों पर महिला, पुरुष, बालक पदयात्री स्नान कर मां कैलादेवी धाम के लिए आगे बढ़ते जा रहे हैं पांचना पुल के घाटों पर पांचना के भरे पानी से सुरक्षा के लिए प्रशासन की ओर से वोट चला रखी है जो घाटों पर नहाने वाले, नदी में कूदकर नहाने वाले श्रद्धालुओं पर निगरानी बनाए हुए हैं। वही ग्राम पंचायत माची की ओर से यात्रियों को सुरक्षित रहने की माईको के द्वारा चेतावनी दी जा रही है और रात्रि के समय श्रद्धालु परेशान ना हो इसके लिए ग्राम पंचायत प्रशासन द्वारा रोशनी की भी पुख्ता व्यवस्था की गई है।

राशिफल मंगलवार 21 मार्च, 2023

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र सांय 5:25 तक, शुभ योग दिन 12:41 तक, चतुष्पद करण दिन 12:20 तक, चन्द्रमा दिन 11:57 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सांय 5:25 से सूर्योदय तक है। आज चैत्री अमावस्या, देव पितृकार्य अमावस्या, मन्वादि और आज चान्द्र संवत्सर 2079 विक्रमी संवत होगा। आज पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:34 से 11:04 तक, लाभ अमृत 11:04 से 2:04 तक, शुभ 3:34 से 5:04 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:49, सूर्यास्त 6:27

मेष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में प्रगति होगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में सार्थक सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व में करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।

कन्या
अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
घर-परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। भागदौड़ से राहत मिलेगी। कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।